घोषणा पत्र

मैं राजीत यादव पंजीयन संख्या Ph.D/1277/2010 dt 04.10.2010 घोषणा करता हूँ कि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्य में वेदना की अनुभूति' संज्ञक शोध मेरे शोध कार्य का परिणाम है। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस शोध प्रबन्ध को मेरे अथवा अन्य किसी के द्वारा किसी अन्य विश्वविद्यालय अथवा संस्था में किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

यह शोध प्रबंध असम विश्वविद्यालय, सिलचर में पी-एच-डी(हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थान - सिलचर
दिनांक -

राजीत यादव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
असम विश्वविद्यालय, सिलचर

विषय - सूची

भूमिका : i-xii

प्रथम अध्याय : वेदना का स्वरुप 1-29

द्वितीय अध्याय : निराला का काव्य और जन 30-80

तृतीय अध्याय : निराला के काव्य में वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति का स्वरुप 81-139

चतुर्थ अध्याय : समकालीन राष्ट्रीय परिवेश और वेदना की अनुभूति 140-167

पंचम अध्याय : निराला की वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति की महादेवी और प्रसाद के साथ तुलना 168-214

उपसंहार : 215-227

संदर्भ सूचि : 228-231

भूमिका

(क) विषय का अर्थ, महत्व, क्षेत्र और सिमाएँ, पूर्ववर्ती कार्यों का सर्वेक्षण, शोध प्रवृत्ति एवं अपनायी गयी शोध दृष्टि।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध निराला के काव्य में वेदना की अनुभूति से सम्बन्धित है। निराला जी छायावाद के स्तम्भ के रुप में जाने जाते हैं। एक सफल रचनाकार की जो भी और जितनी गुणवत्ता होनी चाहिए वे सभी निराला में विद्यमान है। *'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला'* आधुनिक युग के मौलिक क्षमता से सम्पन्न कवि हैं। इसका प्रमाण कवि का रचनात्मक वैविध्य स्वयं प्रस्तुत करता है। भाषा और संवेदना के जितने रंग निराला में हैं उतने शायद किसी अन्य कवि में होंगे। *'जुही की कली' (1916)* से लेकर मृत्यु विषयक उनकी अंतिम कविताओं (1961) तक निराला का कवि व्यक्तित्व बराबर गतिशील और सर्जनशील रहा है।

निराला के काव्य का अन्वेषण आलोचकों ने शून्यवादी, पूर्ण ब्रह्मवादी तथा शांकर अद्वैतवादी या अद्वैतवेदांती दृष्टियों से किया है। विद्वानों ने निराला के काव्य पर स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रभाव बताया है। किन्तु उनके काव्य में एक पक्ष पूरी तरह उनके अपने जीवन से जुड़ा हुआ है। उनके जीवन के कई पक्ष हैं जिनमें एक पक्ष वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति का भी है। निराला की कविताओं में जो दुख और विषाद है उसका सम्बन्ध कहीं-न-कहीं उनके जीवन की उन दुःखद घटनाओं से भी है, जिनमें इन्फ्लुएंजा से उनकी पत्नी, पिता, चाचा आदि एक के बाद एक स्वर्ग सिधारे। पत्नी की असामयिक मृत्यु का निराला के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस वज्रपात से उनका बुरा हाल था। वे घंटों श्मशान में बैठे रहते। कहीं कोई चूड़ी का टुकड़ा, हड्डी या राख जो मिल जाता तो उसे हृदय से लगाये घुमा करते। नदी के किनारे बैठे घंटों बहती हुई लाशों का दृश्य देखते। 21 साल के युवक निराला के कन्धों पर चार भतीजों और अपनी दो संतानों का भार आ पड़ा। नौकरी थी नहीं और उनके लिखे काव्य सम्पादक छापना नहीं चाहते थे ऐसी स्थिति में आर्थिक चिन्ता के साथ-साथ शारीरिक और मानसिक रोग से भी वे ग्रस्त रहे। इन सबकी मार्मिक अभिव्यक्ति कहीं प्रत्यक्ष

रूप से और कहीं अप्रत्यक्ष रूप से उनकी कविता में हुई है। निराला के काव्य का अध्ययन उनकी वेदना को केन्द्र में रखकर करने की चेष्टा की जायेगी। प्रस्तुत शोध में इस विषय पर ध्यान दिया जायेगा की उनकी वेदना की अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है।

निराला के काव्य में वेदना तीन कारणों से आयी। इनमें पहला कारण है छायावाद इनका अर्विभाव उस समय हुआ जब हिन्दी साहित्य में छायावाद अपनी चरम सीमा पर था और उस वाद की प्रमुख प्रवृति ही थी वेदना जिसका प्रभाव निराला के काव्य पर पड़ा।

दूसरा कारण है, उनके जीवन की वे दुखदायी परिस्थितियाँ हैं जिनमें उनके आत्मीय जनो का विछोह है।

तीसरा कारण है युगीन सामाजिक परिस्थितियाँ उन्होंने सामाज में व्याप्त उस शोषण और शोषित वर्ग को देखा और उसकी वेदना की अभिव्यक्ति अपने काव्य के माध्यम से की।

निराला का दुख व्यष्टि और समिष्टि का भेद न समझने से पैदा नहीं हुआ बल्कि यह उनके जीवन संघर्ष से उत्पन्न हुआ है, प्रतिक्रियावादियों के सम्मिलित विरोध के कारण पैदा हुआ है तथा उनके आर्थिक कष्टों के कारण पैदा हुआ है। निराला के कवि जीवन के आरंभ से प्रायः उसके अंत तक कवि की मृत्युज्जयी साधना का इतिहास सुरक्षित है। निराला की रचनाओं में व्याप्त एक मूल स्वर है उस अपराजित और अपराजेय मन का जो उनके गीतों में स्पष्ट सुना जा सकता है। मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की साधना कोई क्षणस्थायी साधना न थी। कितने हीं दिनों तक उन्होंने मृत्यु की वेदना को सहा ! मृत्यु को उन्होंने मुक्ति कहा, लेकिन वह मुक्ति वाली मृत्यु उनकी साधना आराधना के बहुत दिन बाद आयी। इतने वर्षों तक मृत्यु की इस असह्य यन्त्रणा को उन्होंने हँसते- हँसते सहा। कितने कवि इस गरल को पी कर उसकी ज्वाला में झुलसते हुए अपनी रचनाओं में ओज और प्रसाद गुण उत्पन्न कर सके हैं।

अपने अंतिम दिनों में जब उनका तन जर्जर हो गया था, उनका अपराजेय मन मानो मृत्यु की झाँकी देख आता था और फिर इस जीवन में लौटकर अपनी अनुभूति की उलटबाँसी सुनाने लगता था उनकी रचनाएँ सरल नहीं हैं फिर भी पढ़ने वालों के मन पर यह छाप जरुर पड़ेगी की निराला किसी अनुभूति की बात कह रहा है जो सच्ची है और जो हमारे सामान्य अनुभवों से भिन्न है। निराला जी के काव्य में छायावाद और प्रगतिवाद दोनों की विशेषताएँ पायी जाती है जिनमें छायावाद प्रमुख रूप से दिखाई देता है और चूँकि छायावाद की प्रमुख प्रवृतियों में एक है वेदना की अनुभूति। निराला की प्रगतिवादी रचनाओं में जीवन के ठोस यथार्थ का भी रूप दिखाई देता है। आज तक आलोचकों ने निराला की रचनाओं का आंकलन या तो छायावादी दृष्टिकोण से किया है या फिर प्रगतिवादी दृष्टिकोण से। मेरी समझ में उनके काव्य में वेदना का पक्ष उतना ही महत्वपूर्ण है जितना दार्शनिक या प्रगतिवादी चेतना। वेदना की अनुभूति वाले पक्ष को मुख्य विषय बना कर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है यह हिन्दी शोध क्षेत्र की एक समस्या है। अतः इस विषय को शोध का विषय बनाया जाना स्वाभाविक है।

इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए इस शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। ये अध्याय हैं - (1) वेदना का स्वरुप, (2) निराला का काव्य और जन, (3) निराला के काव्य में वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति का स्वरुप, (4) समकालीन राष्ट्रीय परिवेश और वेदना की अनुभूति, (5) निराला की वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति की महादेवी और प्रसाद के साथ तुलना।

शोध का प्रथम अध्याय है वेदना का स्वरुप। इस अध्याय में वेदना को विस्तारित रुप में समझने का प्रयास किया गया है। वेदना एक भाव है और भाव मुख्य रुप से दो ही होते है सुख और दुःख। इन्हीं दो भावों से विभिन्न भावो की उत्पत्ति होती है उनमें से एक है वेदना। मानव जीवन में वेदना का स्वरुप और स्थिति को समझने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है। साहित्य में वेदना की स्थिति और मानव जीवन का साहित्य से सम्बन्ध और फिर उसी साहित्य में मानव वेदना की उभिव्यक्ति और उसके स्वरुप को इस अध्याय

में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। वेदना के सम्बन्ध में विद्वानों द्वारा दिए गये मतों का उल्लेख और उसे समझने की कोशिश की गई है। वेदना की काव्यगत जो परंपरा रही है उसे स्पष्ट करने की चेष्टा इस अध्याय में हुई है। काव्य में वेदना की अपनी एक परंपरा काव्य के शुरुआत से ही रही है उसके स्वरुप और स्थिति को समझने की कोशिश अध्याय के अन्त में की गई है।

शोध का दूसरा अध्याय है निराला का काव्य और जन। इस अध्याय में निराला के काव्यों में सामान्य जनता किस तरह आलम्बन विभाव के रुप में उपस्थित हुई है इस तथ्य को समझने की कोशिश की गई है। निराला ने परिश्रमशील जनता की दैन्य स्थिति को देखकर उनके भीतर समाहित उस शक्ति की तलाश की जो उन्हें ऐसे में जीने की प्रेरणा देता है। दूसरे अध्याय में इस बात को स्पष्ट किया गया है। तत्कालीन जनता की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और उनकी राजनीतिक स्थिति को समझने और उसे स्पष्ट करने की चेष्टा इस अध्याय में की गई है। 'निराला ने अपने काव्य के माध्यम से सामान्य जन को प्रेरित कर उसको लोकत्व की ओर अग्रसर किया। मानवता की इस महत्ता में ही निराला के काव्य में लोक चेतना एवं समग्रता की भावना समाहित है। यही नही उन्होंने अपने व्यक्तित्व में अदम्य साहस एवं युगीन उत्तरदायित्वों को समेट कर साहित्य को आस्थावान बनाया और निजता से हटकर उसे लोक-जीवन की ओर उन्मुख किया। इन्होंने लोक के अन्तस में विद्यमान देवत्व को पहचान कर मानवता की पराकाष्ठा पर पहँचाने का दृढ़ संकल्प लिया।'1 अध्याय के अन्त में तत्कालीन परिस्थितियों से जनता के आक्रोश और उनके असंतोष को स्पष्ट किया गया है। किस तरह जनता राजनीतिज्ञों और पूँजीपतियों के अत्याचार से पीड़ित और शोषित थी और उनका असंतोष कैसे व्यक्त होता था यह निराला के काव्य में कैसी अभिव्यक्ति पाता है इसका स्पष्टीकरण इस अध्याय के अन्त में किया गया है।

शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय निराला के काव्य में वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति का स्वरुप में निराला ने वेदना की अभिव्यक्ति के जो माध्यम चुने हैं उन

माध्यमों का परिचय और उनका स्पष्टीकरकण करने की चेष्टा की गई है। काव्य में अनेक विषय और माध्यम हो सकते हैं निराला ने लगभग उन सभी को अपने काव्य में स्थान दिया है इस अध्याय में निराला द्वार ग्रहित माध्यमों पर विस्तारित चर्चा करने की चेष्टा की गई है। साहित्य में चाहे वह गद्य साहित्य हो चाहे पद्य दोनों ही विधाओं में पात्र की प्रमुखता पर संदेह नहीं किया जा सकता। निराला ने अपने काव्य में भी इन्हीं पात्रों के माध्यम से वेदना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। शोध के इस भाग में निराला ने विशेष रुप से समाज के निम्न तबके के पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाया है और उनमें एक आक्रोश भरने की चेष्टा की है इसी तथ्य को समझने की कोशिश की गई है। शोध के अगले उप अध्याय में घटना के माध्यम से वेदना को अभिव्यक्त करने की निराला की कोशिश को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। वेदना की अभिव्यक्ति का एक और शसक्त माध्यम है प्रकृति-चित्रण निराला ने अपने काव्य में प्रकृति के विभिन्न रुपों को अपने काव्य में स्थान दिया है। बादल, झरने, पुष्प, पहाड़, नदियाँ इत्यादि से इन्हें अगाध प्रेम रहा। बादलों के प्रति इनके प्रेम को देख कर डॉ. रामविलास शर्मा ने कहै है, 'इन्होंने बंगाल और अवध दोनों ही प्रांतो की बरसात देखी है। शायद कोई भी कवि मूसलाधार पानी में इतना न नहाया होगा। बाहर घूमते हुए बारिश आ गई तो इन्हें घर लौटने की कभी जल्दी नहीं होती। बादल घिरे हो, तो भी दोस्तों को यह समझाते हुए कि पानी बरसने की जरा भी शंका नहीं, वे उनके साथ घूमने चल देते।'2 'राम की शक्तिपूजा' में प्रकृति को विराट रुपों का चित्रण निराला ने जिस सफलता से किया है उसे अन्यत्र ढ़ूढ़ पाना हिन्दी साहित्य में कठिन है। हिन्दी साहित्य में चाहे कोई भी काल रहा हो भक्ति इसमें कुछ ऐसे रची बसी है जैसे फूल के साथ सुगन्ध। इसका कारण यह है कि हमारे संस्कार ही ऐसे हैं जिसमें भक्ति का प्रवेश बड़ी आसानी से हो जाता है। निराला में भी भक्ति के ये संस्कार विद्दमान हैं शायद यही कारण है कि उन्होंने वेदना की अभिव्यक्ति करते हुए भी भक्ति का दामन नहीं छोड़ा और भक्ति भावना के माध्यम से भी वेदना की अभिव्यक्ति करने में सफलता प्राप्त की है। स्वामी विवेकानन्द के प्रभाव के कारण उनमें भक्ति भावना की अभिव्यक्ति किस रुप में हुई है उसमें वर्णित वेदना को स्पष्ट करने की